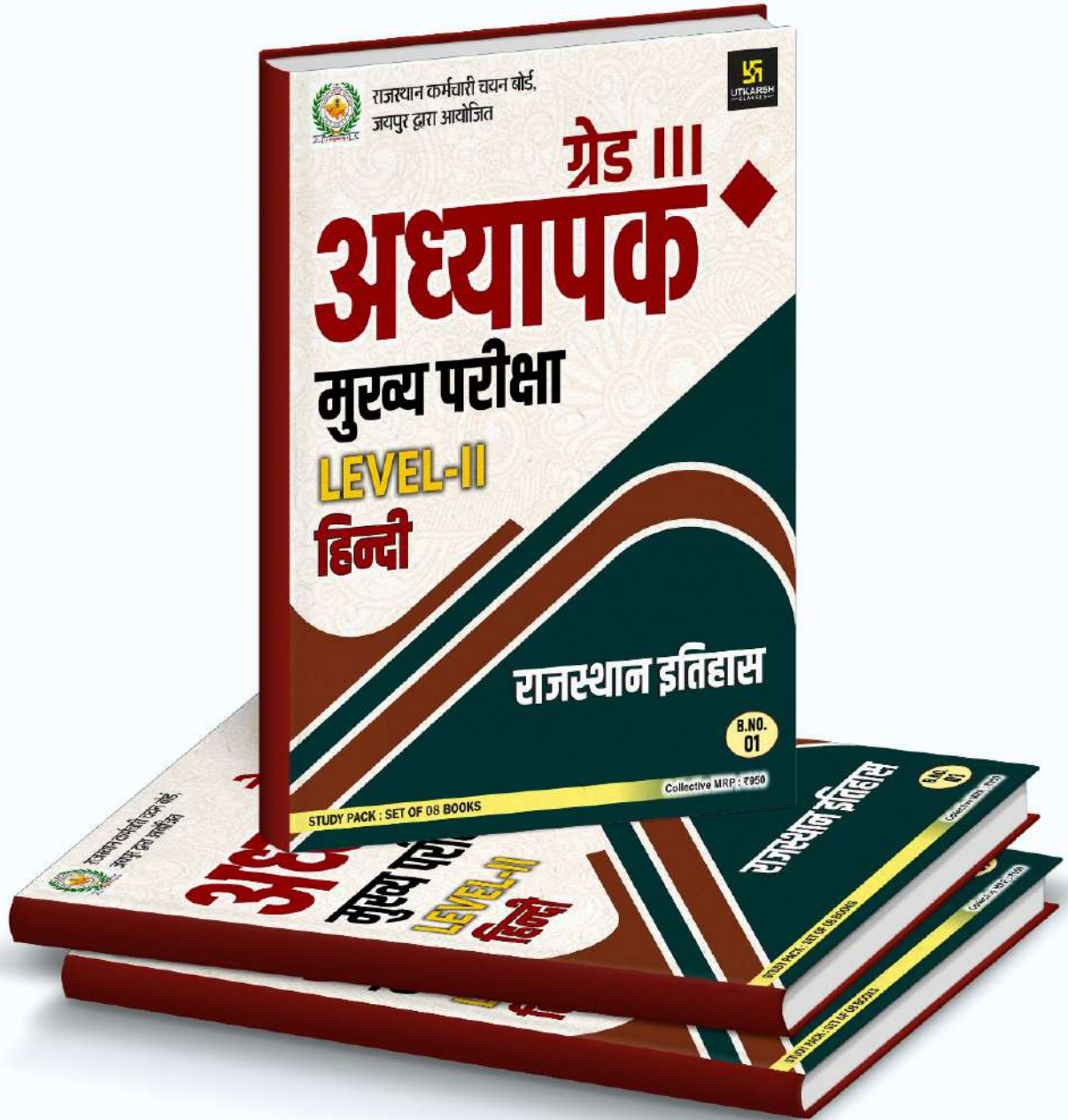






अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ. सं.
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ इत्यादि	2-5
2.	राजस्थान की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ, प्रमुख राजवंश, उनकी प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था इत्यादि	6-44
3.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान, राजस्थान में जनजाति एवं किसान आंदोलन	45-57
4.	प्रजामण्डल एवं राजस्थान का एकीकरण	58-66
5.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	67-75

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ : कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर, बालाथल और बैराठ इत्यादि।

1. कालीबंगा

- यह एक कांस्ययुगीन सभ्यता है।
- **कालक्रम** - 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. (कार्बन डेटिंग पद्धति के अनुसार)
- **स्थिति** - प्राचीन सरस्वती/दृषद्वती नदी (वर्तमान में घग्घर) तट पर
- **जिला** - हनुमानगढ़
- **खोज** - वर्ष 1952 में अमलानंद घोष द्वारा।
- **उत्खनन** - वर्ष 1961-1964 के मध्य बी. बी. लाल, बी.के. थापर, जे.वी. जोशी, एम.डी. खरे, के.एम. श्रीवास्तव तथा एस.जी. जैन द्वारा।
- इसका 5 स्तरों तक उत्खनन किया गया।
- यहाँ उत्खनन के लिए दो टीलों को चुना गया जो समतल भूमि से 12 मीटर की ऊँचाई पर थे। ये दोनों टीले **सुरक्षात्मक दीवार** से घिरे हुए थे।
- **कालीबंगा नामकरण** - उत्खनन से प्राप्त काले रंग की चूड़ियों के टुकड़ों के कारण।
- यह **नगरीय सभ्यता** थी।
- 1. **प्राक् हड़प्पा या पूर्व हड़प्पा कालीन चरण** -
- हड़प्पा व मोहनजोदड़ो के दुर्गों की तरह यहाँ पर भी दुर्ग पश्चिम में तथा आवास क्षेत्र पूर्व में स्थित हैं।
- रक्षा प्राचीरों से दुर्ग व निचले नगर के घिरे होने का स्पष्ट साक्ष्य मिला है।
- पश्चिमी टीले को '**कालीबंगा प्रथम**' नाम दिया गया।
- **नगर निर्माण** - समचतुर्भुजाकार मिट्टी की 'रक्षा प्राचीर' के अंदर आवासों का निर्माण।
- 'सूर्यतपी ईंटों' से दीवारें बनती थी और इन्हें मिट्टी से जोड़ा जाता था।
- मार्ग की चौड़ाई 5-5.5 मीटर। नगर की सड़कें पक्की थी।
- **आवास** -
- मकानों में दालान, चार-पाँच बड़े कमरे व कुछ छोटे कमरे और मकानों के आगे चबूतरे भी रहते थे।
- कमरों की फर्श को चिकनी मिट्टी से लीप दिया जाता था। कहीं-कहीं पकाई गई ईंटों के फर्श भी दिखाई देते हैं।
- मकानों की छत मिट्टी से निर्मित होती थीं जिनको लकड़ी की बल्लियों से बनाया जाता था। छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ भी देखी गई हैं।
- मकानों में चूल्हे के अवशेष भी मिले हैं।
- मकानों की नालियाँ, शौचालय, भट्टियों व कुओं में पकी ईंटों का प्रयोग किया गया।
- कालीबंगा का एक फर्श, हड़प्पाकाल का एकमात्र ऐसा उदाहरण है जहाँ अलंकृत ईंटों का प्रयोग हुआ है। इस पर प्रतिच्छेदी वृत्त का अलंकरण है।
- **जल निकास प्रणाली** - लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त।
- गंदे पानी को निकालने के लिए विशेष प्रकार के गोलाकार भांड होते थे।

- **मृद्भांड** - विशेष प्रकार के पात्र राजस्थान में सर्वप्रथम **सौंथी** से प्राप्त हुए हैं इसलिए इन्हें '**सौंथी मृद्भांड परंपरा**' नाम दिया गया।
- यहाँ से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृद्भांडों को 6 उपभागों में विभाजित किया गया है। इनमें विभिन्न प्रकार के घड़े, तश्तरियाँ, लघु पात्र एवं कटोरे प्रमुख हैं। अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्यामितीय, पशु-पक्षियों का चित्रण।
- **कृषि** - जुते हुए खेतों के अवशेष प्राप्त। संस्कृत साहित्य में उल्लिखित '**बहुधान्यदायक क्षेत्र**' यही था।
- घग्घर नदी के बाएँ किनारे पर स्थित खेत तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के हैं, संसार भर में उत्खनन से प्राप्त खेतों में यह पहला है।
- खेत में ग्रिड पैटर्न की गर्तधारियों के निशान हैं जो एक-दूसरे के समकोण पर बने हुए हैं।
- दो तरह की फसलों को एक साथ उगाया जाता था।
- 2. **विकसित हड़प्पा या हड़प्पाकालीन चरण** -
- विशिष्ट लोगों के निवास हेतु मुख्य प्रासाद तथा साधारण जनता के लिए निम्न प्रासाद का निर्माण जो एक-दूसरे से 40 मीटर चौड़े मार्ग द्वारा विभाजित हैं।
- **सात अग्निवेदिकाएँ** प्राप्त हुई जो आयताकार हैं।
- **डॉ. दशरथ शर्मा** ने कालीबंगा को सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा है (पहली हड़प्पा तथा दूसरी मोहनजोदड़ो)।
- **लिपि** - सैंधव लिपि। इसे पढ़ा नहीं जा सका है। यह लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।
- **मुहर** - यहाँ मिट्टी से बनी सर्वाधिक मुद्राएँ अथवा मुहरें मिली हैं।
- यहाँ से प्राप्त बेलनाकार मुहरें मेसोपोटामिया की मुहरें जैसी हैं।
- **मूर्तिकला** - मिट्टी से बना कुत्ता, भेड़िया, चूहा और हाथी की प्रतिमाएँ मिली हैं। पंख फैलाए बगुले की प्रतिमा और भग्नावस्था में तीन मानवाकृतियाँ मिली हैं।
- माटी की वृषभाकृति कला कौशल की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है।
- **अंत्येष्टि क्रिया एवं चिकित्सा** - दुर्ग वाले टीले पर स्थित कब्रिस्तान से शव विसर्जन के 37 उदाहरण मिले हैं।
- अंत्येष्टि संस्कार की तीनों विधियाँ पूर्ण समाधीकरण, आंशिक समाधीकरण एवं दाह संस्कार के साक्ष्य मिले हैं।
- एक युगल शवाधान तथा अंडाकार कब्रें भी प्राप्त हुई हैं जिसमें एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छिद्र किए जाने के प्रमाण हैं। यह शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण है।
- 2600 ईसा पूर्व भूकंप की जानकारी उत्खनन से प्राप्त हुई जो '**भूकंप का प्राचीनतम साक्ष्य**' है।
- संभवतः घग्घर नदी के सूखने से कालीबंगा का विनाश हुआ।
- **प्राप्त प्रमुख अवशेष** - प्राक् सैंधव काल के स्तर से एक दुर्ग, बेलनाकार मुहरें, मिट्टी की मुहरें, चूड़ियाँ एवं हल, अलंकृत ईंटों का प्रयोग, खिलौने, ताँबे का बैल एवं चूड़ियाँ, चाकू और कुल्हाड़ियाँ, ताँबे के औजार, काँच के मणिए, जुते हुए खेत, सड़कें, बस्ती, गोल कुएँ, नालियाँ, पत्थर के सिलबट्टे, गाड़ी के पहिए, चाक निर्मित मृद्भांड, मकानों व धनी लोगों के आवास, सात अग्निवेदियाँ, बेलनाकार तंदूर।

- कालीबंगा को 'दीन-हीन' बस्ती भी कहा जाता है।
- कालीबंगा में मातृसत्तात्मक परिवार की व्यवस्था विद्यमान थी।
- कालीबंगा सैंधव सभ्यता का एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ से मातृदेवी की मूर्तियाँ प्राप्त नहीं हुई हैं।
- वर्ष 1961 में कालीबंगा अवशेष पर भारत सरकार द्वारा 90 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया।
- राज्य सरकार द्वारा कालीबंगा से प्राप्त पुरा अवशेषों के संरक्षण हेतु वर्ष 1985-86 में एक संग्रहालय की स्थापना की गई।

2. आहड़

- **स्थिति** - आयड़ या बेड़च नदी के किनारे
- **जिला** - उदयपुर
- डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने आहड़ सभ्यता का समृद्धकाल 1900 ई. पू. से 1200 ई.पू. तक माना है।
- **उपनाम** -
 1. आघाटपुर या आघट दुर्ग (दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में)
 2. ताम्रवती नगरी
 3. धूलकोट
- **उत्खनन** -
 1. सर्वप्रथम वर्ष 1953 में अक्षयकीर्ति व्यास
 2. आर. सी. अग्रवाल द्वारा वर्ष 1956 ई. में
 3. वर्ष 1961-62 में एच. डी. सांकलिया एवं वी. एन. मिश्रा
- डॉ. सांकलिया ने इसे 'ताम्रकाल' की संज्ञा दी है।
- **बस्ती** - उत्खनन से बस्तियों के 8 स्तर मिले
 1. **प्रथम स्तर** - मिट्टी की दीवारें, मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े तथा पत्थर के ढेर प्राप्त हुए।
 2. **द्वितीय स्तर** - कूटकर तैयार की गई दीवारें और मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े मिले।
 3. **तृतीय स्तर** - कुछ चित्रित बर्तन और उनका घरों में प्रयोग होना प्रमाणित।
 4. **चतुर्थ स्तर** - एक बर्तन से दो ताँबे की कुल्हाड़ियाँ मिलीं।
- यह एक ग्रामीण सभ्यता थी।
- **आवास** - मकान पत्थरों की नींव डालकर जबकि दीवारें मिट्टी से बनी ईंटों की होती थी।
- छतों पर बाँस बिछाकर मिट्टी का लेप किया जाता था।
- मकानों का फर्श काली मिट्टी के साथ नदी की बालू मिलाकर बनाया जाता था। मकानों से गंदा पानी निकालने की नालियों का भी प्रमाण।
- एक मकान में 4 से 6 बड़े चूल्हों का होना संयुक्त परिवार की व्यवस्था का प्रमाण है।
- **मृद्भांड** - लाल, भूरी व काली मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग।
- घरेलू बर्तन - घड़े, कटोरियाँ, रकाबियाँ, प्याले, मटके, कुंडे, भंडार के कलश आदि प्राप्त।
- पशुपालन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था और कृषि से परिचित थे।
- 'गोरे' या 'कोठे' - अनाज रखने के मृद्भाण्डों का स्थानीय नाम।
- **मुद्राएँ एवं मुहरें** - तृतीय ईसा पूर्व से प्रथम ईसा पूर्व की यूनानी ताँबे की 6 मुद्राएँ व 3 मुहरें प्राप्त। एक मुद्रा पर एक ओर त्रिशूल तथा दूसरी ओर अपोलोदेवता अंकित हैं जो तीर एवं तरकस से युक्त हैं।
- **उद्योग** - पत्थरों की उपलब्धता से अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पत्थरों के शस्त्र बनाने का बहुत बड़ा केंद्र रहा होगा।
- **प्रमुख व्यवसाय** - ताँबा गलाना तथा उससे उपकरण बनाना।

- उत्खनन से प्राप्त ठप्पों से रंगाई-छपाई व्यवसाय के उन्नत होने का अनुमान।
- तौल के बाट व माप प्राप्त।
- ताँबे की 6 कुल्हाड़ियाँ, अंगूठियाँ, चूड़ियाँ मिली हैं।
- 79 लोहे के उपकरण भी मिले हैं।
- मूल्यवान पत्थरों; जैसे- गोमेद, स्फटिक आदि का प्रयोग आभूषण तथा ताबीज के रूप में किया जाता था।
- शवों को गाड़ा जाता था।
- खुदाई में पूजा-पात्र भी प्राप्त हुए हैं।
- टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ मिलीं जिन्हें 'बनासियन बुल' कहा गया है।
- आहड़ से नारी की खण्डित मृण्मूर्ति मिली है जो कमर के नीचे लहंगा धारण किए हुए है।
- आहड़ से मृण्मूर्तियों में क्रिस्टल, फेन्यास, जैस्पर, सेलखड़ी तथा लेपीस लाजुली जैसे कीमती उपकरणों का प्रयोग किया जाता था।
- गिलूण्ड (राजसमन्द) से आहड़ के समान-धर्म संस्कृति मिली है।
- आहड़ सभ्यता के लोग मिट्टी के बर्तन पकाने की उलटी तपाई विधि से परिचित थे।

3. गणेश्वर

- **स्थिति** - कांतली नदी के किनारे
- **जिला** - सीकर जिले में नीम का थाना स्थान से कुछ दूरी पर स्थित
- गणेश्वर प्राक् हड़प्पा कालीन सभ्यता स्थल है।
- ताम्रयुगीन सभ्यताओं में से प्राप्त तिथियों में गणेश्वर प्राचीनतम सभ्यता स्थल है।
- **समय** - 2800 ईसा पूर्व (डी. पी. अग्रवाल ने रेडियो कार्बन विधि एवं तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर निर्धारित की।)
- **उपनाम** -
 1. पुरातत्व का पुष्कर
 2. भारत में ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी
 3. ताम्र संचयी संस्कृति
- **उत्खनन** - रतनचंद्र अग्रवाल द्वारा
 - लगभग 2000 ताम्र आयुध व ताम्र उपकरण प्राप्त।
 - इन उपकरणों में तीर, भाले, सूइयाँ, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के काँटे, चूड़ियाँ व विविध ताम्र आभूषण प्रमुख हैं।
 - प्राप्त सामग्री में 99 प्रतिशत ताँबा है।
 - भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं।
 - ताम्र आयुधों के साथ लघु पाषाण उपकरण प्राप्त।
 - गणेश्वर से ताँबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को भेजा जाता था।
 - **कृषवर्णी मृदपात्र**- गणेश्वर से प्राप्त मृदपात्र।
 - काले व नीले रंग से अलंकृत मृदपात्र भी मिले।
 - प्राप्त मृदपात्रों में प्याले, तश्तरियाँ व कुंडियाँ प्रमुख हैं।
 - गणेश्वर से मिट्टी के छल्लेदार बर्तन भी प्राप्त हुए हैं।
 - मिट्टी के छल्लेदार बर्तन केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं।
 - मकानों के लिए पत्थर का प्रयोग करने के साक्ष्य मिले हैं।
 - बस्ती को बाढ़ से बचाने के लिए पत्थर के बाँध भी बनाए गए थे।
 - गणेश्वर में ईंटों के उपयोग के प्रमाण नहीं मिले हैं।
 - गणेश्वर सभ्यता के उत्खनन से दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्रपिण भी प्राप्त हुई है।

अनुक्रमणिका		
क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	राजस्थान की स्थापत्य कला : I. दुर्ग II. महल III. मंदिर IV. बावड़ियाँ V. हवेलियाँ VI. छतरियाँ	2-33
2.	राजस्थान के प्रमुख मेले	34-37
3.	राजस्थान के प्रमुख त्योहार	38-44
4.	राजस्थान की प्रमुख लोककला	45-48
5.	राजस्थान के प्रमुख लोक संगीत	49-55
6.	राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य	56-60
7.	राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य	61-64
8.	राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा एवं विरासत- रीति-रिवाज	65-70
9.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन, प्रमुख संत एवं लोक देवता	71-84
10.	राजस्थान के प्रमुख वस्त्र एवं आभूषण	85-89
11.	राजस्थान की प्रमुख चित्रकला	90-94
12.	राजस्थान के प्रमुख हस्तशिल्प	95-101
13.	राजस्थानी भाषा : I. राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियाँ II. प्रमुख राजस्थानी कृतियाँ III. प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार IV. राजस्थानी संत साहित्य एवं लोक साहित्य V. राजस्थानी भासा अर साहित्य	102-120

राजस्थान की स्थापत्य कला

अध्याय I दुर्ग

- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- राजस्थान में दुर्गों की स्थापना के विकास का प्रथम आधार कालीबंगा की खुदाई में मिलता है।
- दुर्गों की विशेषताएँ-**
 - सुदृढ़ प्राचीरें
 - अभेद्य बुर्जें
 - विशाल परकोटे
 - दुर्ग के चारों ओर गहरी खाई
 - दुर्ग के भीतर जलाशय
 - शस्त्रागार
 - मंदिर निर्माण
 - अन्न भण्डार की स्थापना
 - सुरंग प्रणाली
 - गुप्त प्रवेश द्वार
- कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की श्रेणियाँ - 04**
 - औदुक दुर्ग
 - पर्वत दुर्ग
 - धान्वन दुर्ग
 - वन दुर्ग
- कौटिल्य के अनुसार राज्य के अंग - 07**
 - राजा
 - अमात्य (मंत्री)
 - जनपद
 - दुर्ग
 - कोष
 - सेना
 - मित्र
- राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए कौटिल्य के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग 'हाथ' की संज्ञा दी है।
- शुक्र नीति के अनुसार दुर्गों के प्रकार - 09**
 - एरण दुर्ग** - वह दुर्ग, जिसके मार्ग में खाई, काँटो व पत्थरों से युक्त दुर्गम मार्ग हों। उदाहरण - जालोर दुर्ग
 - औदुक दुर्ग** - इसे जल दुर्ग भी कहा जाता है। ऐसा दुर्ग जो विशाल जल राशि से घिरा हुआ हो। उदाहरण - गागरोन दुर्ग।
 - पारिख दुर्ग** - वह दुर्ग, जिसके चारों तरफ बहुत बड़ी खाई हो। उदाहरण - जूनागढ़ दुर्ग (बीकानेर)।
 - पारिध दुर्ग** - ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ ईंट, पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी-बड़ी दीवारों का विशाल परकोटा हो। उदाहरण - चित्तौड़ दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग।
 - गिरि दुर्ग** - किसी उच्च गिरि या पर्वत पर अवस्थित दुर्ग। उदाहरण - चित्तौड़ दुर्ग, मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर) आदि।
 - धान्वन दुर्ग** - मरुभूमि (मरुस्थल) में बना दुर्ग। उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
 - वन दुर्ग** - सघन बीहड़ वनों में निर्मित दुर्ग। उदाहरण - सिवाणा दुर्ग।
 - सैन्य दुर्ग** - खंडों या ईंटों से समतल भूमि पर निर्मित दुर्ग, जहाँ युद्ध की व्यूह रचना में चतुर सैनिक निवास करते हों। इस श्रेणी में लगभग सभी दुर्ग आते हैं। शुक्र नीति के अनुसार सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

- (9) **सहाय दुर्ग (लिविंग फोर्ट)** - वह दुर्ग, जिसमें शूरवीर तथा सदा अनुकूल रहने वाले बांधव लोग रहते हो।
उदाहरण - जैसलमेर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग
- भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़) तथा भरतपुर का लोहागढ़ दुर्ग मिट्टी से बने दुर्ग हैं।

- राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -**

1. आमेर दुर्ग	2. गागरोन दुर्ग
3. कुम्भलगढ़ दुर्ग	4. जैसलमेर दुर्ग
5. रणथम्भौर दुर्ग	6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- ये दुर्ग जून, 2013 में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गए।

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

चित्तौड़गढ़ दुर्ग



- प्रकार** - धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग
- निर्माता** - चित्रांगद मौर्य (मौर्य राजा) (प्रसिद्ध ग्रंथ 'वीर विनोद' के अनुसार)
- स्थित** - मेसा पठार, गंभीरी और बेड़च नदियों के संगम, चित्तौड़गढ़
- आकार** - ढ़ेल मछली के समान।
- उपनाम** - राजस्थान का गौरव, गढ़ों का सिरमौर, चित्रकूट।
- इस दुर्ग की परिधि लगभग 13 किलोमीटर हैं।
- कहावत - गढ़ तो गढ़ चित्तौड़गढ़, बाकी सब गढ़ैया।
- मेवाड़ के गुहिलवंशीय शासक बप्पा रावल ने मौर्य शासक मानमोरी को परास्त कर 734 ई. में इस दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- राजस्थान के दुर्गों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा, राज्य का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट तथा एकमात्र दुर्ग जिसमें कृषि की जाती है।
- यह दिल्ली-मालवा मार्ग पर अवस्थित है।

स्थापत्य :-

- अदबदजी का मंदिर, रानी पद्मिनी का महल, गोरा-बादल महल, कालिका माता मंदिर, सूरज कुण्ड, समिद्धेश्वर मंदिर, जयमल-फत्ता (पत्ता) की छतरियाँ, तुलजा माता मंदिर, कुम्भश्याम मंदिर, सतबीस देवरी (जैन मंदिर), शृंगार चँवरी प्रासाद, लाखोटा की बारी, कल्ला राठौड़ की छतरी, रैदास की छतरी, रावत बाघसिंह का स्मारक एवं नवलखा भण्डार।
- सात प्रवेश द्वार** - पाडन पोल (मुख्य व पहला प्रवेश द्वार), भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोड़ला पोल, लक्ष्मण पोल, रामपोल।
- जलापूर्ति के स्रोत** - रत्नेश्वर तालाब, कुम्भसागर, गोमुख झरना, हाथीकुण्ड, झालीबाव तालाब।

विजय स्तम्भ :-

- **उपनाम** - विष्णु स्तंभ, भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष
- **निर्माण** - महाराणा कुम्भा द्वारा।
- **प्रेरणा** - बयाना के विष्णु स्तंभ से
- **वास्तुकार** - जैता, नापा, पोमा एवं पूंजा, भूमि, बलराज
- **कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति की रचना** - कवि अत्रि तथा बाद में महेश भट्ट
- **जीर्णोद्धार** - महाराणा स्वरूप सिंह
- 1437 ई. में 'सारंगपुर युद्ध' में महमूद खिलजी प्रथम को पराजित करने के उपलक्ष्य में विजयस्तम्भ का निर्माण 1440 ई. से 1448 ई. में करवाया गया था।
- यह 9 मंजिला इमारत है जो 30 फीट चौड़ी और 122 फीट ऊँची है। इसमें कुल 157 सीढ़ियाँ हैं।
- इसकी तीसरी मंजिल पर 9 बार अल्लाह शब्द लिखा है।
- इसके चारों ओर भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों की मूर्तियाँ बनी हैं।

सी. वी. वैद्य ने कहा - विष्णु स्तंभ
उपेंद्र नाथ डे ने कहा - विष्णु ध्वज
गोपीनाथ शर्मा ने कहा - लोक जीवन का रंगमंच
आर.पी. व्यास ने कहा - हिंदू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि
फर्ग्युसन ने कहा - टार्जन टावर (इंग्लैंड)

जैन कीर्ति स्तम्भ :-

- 7 मंजिला
- **निर्माणकर्ता** - बघेरवाला जैन जीजा
- **समय** - 10वीं - 13वीं सदी
- **समर्पित** - भगवान आदिनाथ

तीन साके :-

- (1) **पहला साका -**
 - **वर्ष** - 1303 ई.
 - **आक्रमण** - अलाउद्दीन खिलजी
 - **शासक** - राणा रतनसिंह
 - **जौहर** - पद्मिनी
 - **केसरिया** - राणा रतनसिंह, गोरा-बादल का सम्बन्ध चित्तौड़गढ़ के पहले साके से है।
 - **नाम परिवर्तन** - खिज्राबाद
 - (2) **दूसरा साका -**
 - **वर्ष** - 1535 ई.
 - **आक्रमण** - बहादुरशाह (गुजरात सुल्तान)
 - **शासक** - विक्रमादित्य
 - **जौहर** - कर्मावती
 - **केसरिया** - देवलिया के रावत बाघसिंह
 - बहादुरशाह ने अपने सेनापति रुमीखॉ को इस अभियान का नेतृत्व सौंपा था।
 - इस युद्ध में रानी कर्मावती ने मुगल शासक हुमायूँ को राखी भेजकर मदद माँगी थी।
 - (3) **तीसरा साका -**
 - **वर्ष** - 1568 ई.
 - **आक्रमण** - अकबर
 - **शासक** - राणा उदयसिंह
 - **केसरिया** - जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया
- नोट :** नवलखा बुर्ज (बनवीर द्वारा निर्मित लघु दुर्ग) इसी किले में निर्मित है।

कुम्भलगढ़ दुर्ग



- **स्थित** - मेवाड़ - मारवाड़ सीमा पर (राजसमन्द)
- **श्रेणी** - गिरि दुर्ग
- **निर्माण** - महाराणा कुम्भा ने मौर्य शासक सम्प्रति द्वारा निर्मित एक प्राचीन दुर्ग के ध्वंसावशेषों पर शिल्पी मंडन की देखरेख में करवाया था।
- **शिल्पी** - मंडन
- **निर्माण काल** - 1448-1458 ई.
- **उपनाम** - मेवाड़ की तीसरी आँख, कुम्भलमेर, मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी, मत्स्येन्द्र, एट्रस्कन, कुंभलमेरु, कमलमीर आदि।
- **प्रवेश द्वार** - ओरठ पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल और गणेश पोल। (9 द्वार)
- यह अरावली पर्वत की 13 ऊँची चोटियों से घिरा दुर्ग है।
- कुम्भलगढ़ दुर्ग 36 किमी. लम्बे परकोटे से सुरक्षित है।
- कुम्भलगढ़ दुर्ग की सुरक्षा दीवार इतनी चौड़ी है कि एक साथ आठ घुड़सवार चल सकते हैं।
- कर्नल टॉड ने कुम्भलगढ़ की तुलना सुदृढ़ प्राचीरों, बुर्जों व कंगूरों के विचारों से 'एट्रस्कन वास्तु' से की है।
- इस दुर्ग में ही महाराणा उदय सिंह का राज्याभिषेक हुआ था।
- कुम्भलगढ़ दुर्ग से ही महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी युद्ध की तैयारी की थी।

स्थापत्य :-

- झालीबाव (बावड़ी), कुम्भस्वामी (विष्णु), नीलकण्ठ महादेव मंदिर, विष्णु मंदिर, मामादेव (महादेव) का कुंड, झाली रानी का मालिया, उड़ना राजकुमार (पृथ्वीराज राठौड़) की छतरी (12 खम्भों की छतरी) आदि।
- **कटारगढ़ -**
 - इस दुर्ग में स्थित लघु दुर्ग जो महाराणा कुम्भा का निवास स्थान है।
 - इसमें महाराणा प्रताप का जन्म हुआ तथा राणा कुम्भा के पुत्र ऊदा ने कुम्भा की हत्या की थी।
 - कटारगढ़ में ही झाली रानी का मालिया महल बना हुआ है। इसे 'बादल महल' भी कहा जाता है।
 - कटारगढ़ की ऊँचाई के बारे में अबुल फजल ने लिखा है कि "यह इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर की ओर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।"

मेहरानगढ़ दुर्ग



- **निर्माता** - राव जोधा
- **समय** - 1459 ई. में
- **नींव** - करणी माता द्वारा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार	2-11
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	12-20
3.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	21-25
4.	अपवाह तंत्र : झीलें, नदियाँ, बाँध	26-33
5.	राजस्थान की वन-सम्पदा	34-36
6.	वन्य जीव जन्तु, वन्य जीव संरक्षण एवं अभयारण्य	37-43
7.	मृदाएँ एवं मृदा संरक्षण	44-46
8.	राजस्थान की प्रमुख फसलें	47-57
9.	जनसंख्या, जनसंख्या घनत्व, साक्षरता और लिंगानुपात	58-64
10.	राजस्थान की जनजातियाँ एवं जनजातियाँ क्षेत्र	65-69
11.	धात्विक एवं अधात्विक खनिज	70-80
12.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर परम्परागत	81-86
13.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	87-92
14.	राजस्थान में यातायात के साधन	93-97
15.	जल संरक्षण (केवल Level-II के विद्यार्थियों के लिए)	98-101



B.No.03

010426

राजस्थान की स्थिति एवं विस्तार



राजस्थान का नामकरण :-

ब्रह्मवर्त-

- वैदिक काल में इसे ब्रह्मवर्त नाम से जाना जाता था।
- वैदिक काल में यहाँ पर दृषद्वती या सरस्वती नदी का प्रवाह होने का उल्लेख मिलता है।

मरुकांतार-

- इस शब्द का उल्लेख वाल्मीकिकृत 'रामायण' में किया गया है।

राजस्थानीयादित्य-

- इस शब्द का उल्लेख 'बसन्तगढ़ शिलालेख' (सिरोही) में मिलता है।
- बसन्तगढ़ शिलालेख, बसन्तगढ़ (सिरोही) में खेमल माता के मंदिर के बाहर खुदवाया गया था।

राजपूताना-

- इस शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम जॉर्ज थॉमस ने 19वीं सदी के प्रारम्भ (1800 ई.) में किया था।

- 'जॉर्ज थॉमस' ग्वालियर के शासक 'दौलतराव सिन्धिया' का अंग्रेजी कमांडर था।
- राजपूताना शब्द का लिखित प्रमाण 1805 ई. में प्रकाशित 'विलियम फ्रेंकलिन' की पुस्तक 'मिलिट्री मेमॉयर्स ऑफ जॉर्ज थॉमस' में मिलता है।

राजस्थान, रजवाड़ा, रायथान-

- कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'एनाल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान' का प्रकाशन 1829 ई. में करवाया। इस पुस्तक में इस भू-भाग के लिए उन्होंने राजस्थान व रजवाड़ा शब्द का उल्लेख किया था।
- इसका दूसरा नाम 'द सेण्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इण्डिया' है।
- 1835 ई. में कर्नल जेम्स टॉड की मृत्यु हो गई तथा इनकी पत्नी ने 1839 ई. में दूसरी पुस्तक 'पश्चिमी भारत की यात्रा' को प्रकाशित करवाया था।

- मुहणोत नैणसी ने अपनी रचना 'नैणसी री ख्यात' तथा वीरभान के 'राजरूपक' में राजस्थान शब्द का प्रयोग किया।
(यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ लगता है अर्थात् सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का प्रयोग करने का श्रेय कर्नल जेम्स टॉड को दिया जाता है।)
- राजस्थान के एकीकरण के द्वितीय चरण (25 मार्च, 1948) में सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का उल्लेख मिलता है। (पूर्वी राजस्थान संघ के रूप में)
- एकीकरण के छठे चरण (26 जनवरी, 1950) में राजस्थान शब्द को वैधानिक मान्यता मिली।
- एकीकरण के अंतिम चरण (1 नवंबर, 1956) में राजस्थान को राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश पर राज्य के रूप में मान्यता मिली।

राजस्थान का परिचय :-

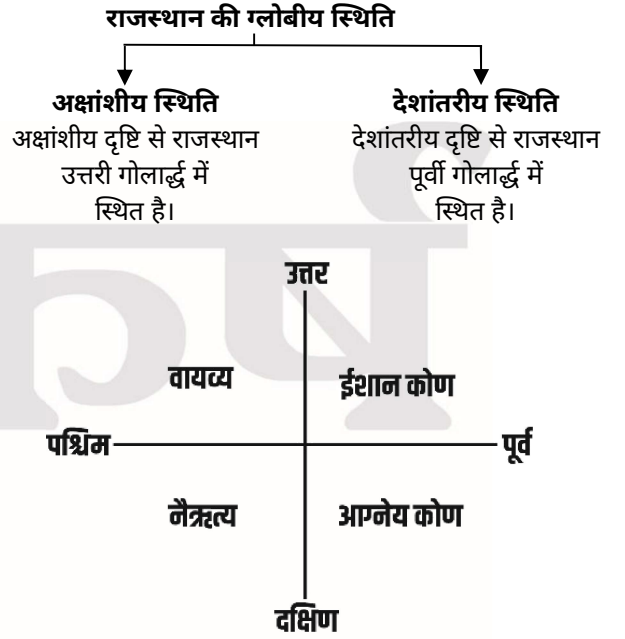


- भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग है। 1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य - राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और गुजरात हैं।
- राजस्थान, क्षेत्रफल की दृष्टि से नार्वे, पोलैण्ड, इटली से भी अधिक क्षेत्रीय विस्तार रखता है।
- राजस्थान, क्षेत्रफल की दृष्टि से श्रीलंका से पाँच गुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजरायल से सत्रह गुना व ब्रिटेन से दुगुना है।
- राजस्थान का क्षेत्रफल लगभग जापान, कॉन्गो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल के भी बराबर हैं।

तथ्य :-

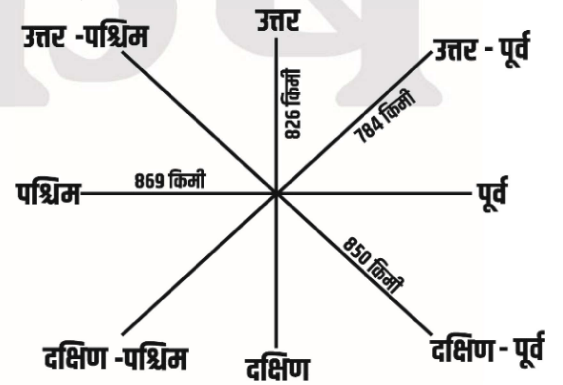
- राजस्थान, धौलपुर से 112.8 गुना बड़ा है।
- धौलपुर, राजस्थान का 0.89 प्रतिशत हिस्सा है।
- विश्व के क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25 प्रतिशत है।
- राजस्थान, भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41 प्रतिशत भाग है।

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति :-



नोट :-

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में है।
- एशिया के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य कोण) में है।
- भारत के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर-पश्चिम (वायव्य कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय, चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम 'टी.एच. हेडले' ने बताया।



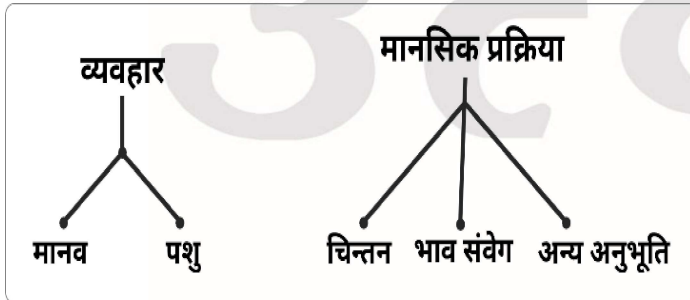
- राजस्थान के उत्तर से दक्षिण की लम्बाई 826 किलोमीटर है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 869 किलोमीटर है।
- राजस्थान के उत्तर-दक्षिण लम्बाई व पूर्व-पश्चिम चौड़ाई में अन्तर 43 किमी. है।
- राजस्थान में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर विकर्ण लम्बाई 850 किमी. है।
- राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर विकर्ण लम्बाई 784 किमी. है।
- राजस्थान में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व में विकर्णों की लम्बाई व चौड़ाई में अन्तर 66 किमी. है।

अनुक्रमणिका		
क्र. सं.	विषय-वस्तु	पृष्ठ सं.
1.	शैक्षिक मनोविज्ञान	2-11
2.	अधिगम	12-40
3.	बाल विकास	41-69
4.	व्यक्तित्व	70-83
5.	समायोजन	84-91
6.	बुद्धि	92-108
7.	अभिप्रेरणा एवं अधिगम में इसका प्रभाव	109-117
8.	विविध अधिगमकर्ता के प्रकार	118-125

शैक्षिक मनोविज्ञान

मनोविज्ञान (Psychology)

- मनोविज्ञान को व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान कहा गया है। जहाँ -



- प्राक् वैज्ञानिक काल में मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र की एक शाखा थी। इस कारण शुरुआत में मनोविज्ञान पर दार्शनिकों का विशिष्ट प्रभाव रहा जिनमें सुकरात, प्लेटो, अरस्तू प्रमुख थे।
- एबिंगहॉस (Ebbinghaus)** के अनुसार - "मनोविज्ञान का भूतकाल अत्यंत लम्बा है परंतु इसका इतिहास काफी छोटा है।"
- जब विलहेल्म वुण्ट (Wilhelm Wundt) ने 1879 ई. (लिपजिंग जर्मनी) में मनोविज्ञान की पहली प्रयोगशाला खोली, तब मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र के चंगुल से निकलकर एक स्वतन्त्र विज्ञान का दर्जा पा सकने में समर्थ हो सका।
- मनोविज्ञान शब्द दो ग्रीक/लैटिन शब्दों साइकी (Psyche) अर्थात् आत्मा और लॉगोस (Logos) अर्थात् विज्ञान अथवा एक विषय के अध्ययन से बना है।
- अतः मनोविज्ञान को सर्वप्रथम आत्मा के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया।
- मनोविज्ञान का क्रमशः विकास इस प्रकार हुआ -**
 - (1) आत्मा का विज्ञान
 - (2) मन/मस्तिष्क का विज्ञान
 - (3) चेतना का विज्ञान
 - (4) व्यवहार का विज्ञान - मनोविज्ञान का आधुनिकतम अर्थ
- R.S. वुडवर्थ** - "मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर अपने मन का त्याग किया, तत्पश्चात् अपनी चेतना का त्याग किया, परंतु इसका सम्बन्ध अब भी (वर्तमान) व्यवहार से बना हुआ है।"
- "केलर के अनुसार** मनोविज्ञान का अध्ययन-क्षेत्र केवल मन या चेतना नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहार से संबंधित है।"

मनोविज्ञान का क्षेत्र :-

- एक विषय के रूप में मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।
- अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (APA) जिसकी स्थापना 1892, जी. स्टेनले हॉल द्वारा की गई। इसमें कुल 56 डिवीजन है। जिनसे मनोविज्ञान के क्षेत्र के बारे में स्पष्ट ज्ञान होता है।

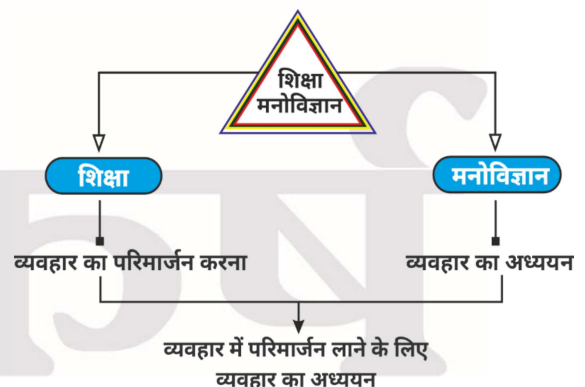
- डिवीजन की खास विशेषता यह है कि इसमें डिवीजन संख्या 4 एवं 11 खाली (vacant) है।
- अतः APA में कुल 54 डिवीजन है।
- विषय के अध्ययन-अध्यापन और उपयोग की दृष्टि से इसे कुछ विशेष शाखाओं में बाँटा जा सकता है-

मनोविज्ञान का क्षेत्र		
क्र.	शुद्ध मनोविज्ञान (Pure Psychology)	अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान (Applied Psychology)
1.	सामान्य मनोविज्ञान	नैदानिक मनोविज्ञान
2.	असामान्य मनोविज्ञान	औद्योगिक एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान
3.	प्रयोगात्मक मनोविज्ञान	क्रीड़ा मनोविज्ञान
4.	समाज मनोविज्ञान	न्यायिक मनोविज्ञान
5.	विकासात्मक मनोविज्ञान	सैन्य मनोविज्ञान
6.	व्यक्तित्व मनोविज्ञान	उपभोक्ता मनोविज्ञान
7.	दैहिक मनोविज्ञान	सामुदायिक मनोविज्ञान
8.	बाल मनोविज्ञान	पर्यावरणी मनोविज्ञान
9.	संज्ञानात्मक मनोविज्ञान	परामर्श मनोविज्ञान
10.	परा मनोविज्ञान	शिक्षा/ शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान (Educational Psychology)

अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र एवं प्रभावी शिक्षण के निहितार्थ-

- शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है- 'शिक्षा' और 'मनोविज्ञान'।



- **शिक्षा का शाब्दिक अर्थ-** 'शिक्षा' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'एजुकेशन' (Educa-tion) शब्द का हिन्दी अनुवाद है। इस शब्द की व्युत्पत्ति **लैटिन भाषा** के 'एडुकेटम' (Educatum) शब्द से हुई है। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- 'ई' (E) तथा 'ड्यूको' (Duco)। 'ई' (E) का अर्थ है- अन्दर से तथा 'ड्यूको' (Duco) का अर्थ है-आगे बढ़ाना अथवा विकास करना। इस प्रकार 'एडुकेटम' शब्द का अर्थ बालक की जन्मजात शक्तियों को अन्दर से बाहर की ओर विकसित करना है।
- **शिक्षा का व्यापक अर्थ-** व्यापक अर्थ में शिक्षा एक जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। डिम्बल के अनुसार, "शिक्षा के अन्तर्गत वे सभी अनुभव आ जाते हैं जो व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।" बालक जितने भी व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है, जितने भी स्थानों पर जाता है, जितने भी दृश्य देखता है, जितने भी सम्बन्धों की सुरक्षा करता है, जितने भी कार्यों को सम्पन्न करता है, सभी से वह कुछ न कुछ शिक्षा ग्रहण करता है।
- जॉन ड्यूवी ने प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा दी।

शिक्षण व्यवस्था के आधार पर शिक्षण के प्रकार-

1. **औपचारिक शिक्षण (Formal Teaching)-** इस प्रकार का शिक्षण एक निश्चित समयावधि एवं स्थान पर प्रदान किया जाता है। औपचारिक शिक्षण हमेशा पाठ्यक्रम के आधार पर करवाया जाता है। औपचारिक शिक्षण नियमबद्ध, व्यवस्थित एवं योजनापूर्ण होता है।
2. **अनौपचारिक शिक्षण (Informal Teaching)-** अनौपचारिक शिक्षण किसी प्रकार की समय सीमा एवं स्थान विशेष के बंधन में बंधा हुआ नहीं होता है। यह शिक्षण बालक अपने परिवार, समाज एवं परम्पराओं के माध्यम से निरन्तर ग्रहण करता है। बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया अनौपचारिक शिक्षण के माध्यम से अधिक सम्पन्न होती है।

शिक्षण की द्विमुखी प्रक्रिया -

- **एडम्स महोदय** ने शिक्षा को एक द्विमुखी प्रक्रिया माना है, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी दो व्यक्तित्व सम्मिलित हैं।

शिक्षण की त्रिमुखी प्रक्रिया -

- **जॉन डी. वी.** के अनुसार, शिक्षा की प्रक्रिया त्रिमुखी है- शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम।
- **रायबर्न** ने इसी प्रकार शिक्षण की प्रक्रिया को त्रिमुखी बताया है। रायबर्न के अनुसार, "शिक्षा में तीन केन्द्र बिन्दु हैं- शिक्षक, शिक्षार्थी और विषय। 'शिक्षण' इन तीनों में स्थापित किया जाने वाला सम्बन्ध है।"

शिक्षण के स्तर -

- **स्मृति स्तर - हरबर्ट**
 - सबसे सरल स्तर
 - हरबर्ट की पंच पदीय प्रणाली
 - (i) प्रस्तावना व तैयारी तथा उद्देश्य कथन।
 - (ii) प्रस्तुतीकरण
 - (iii) तुलना व संबंध
 - (iv) निष्कर्ष एवं सामान्यीकरण
 - (v) प्रयोग
- **अवबोध स्तर - मॉरीसन**
 - इसके पाँच पद हैं-
 - (i) अन्वेषण/खोज
 - (ii) प्रस्तुतीकरण
 - (iii) आत्मीकरण

(iv) संगठन

(v) वर्णन

चिंतन स्तर - हण्ट

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान विषय के एक विशिष्ट व्यवहारात्मक रूप का प्रतिनिधित्व करता है। शिक्षा मनोविज्ञान व्यवहारात्मक मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें मनोविज्ञान विषय के नियम, सिद्धान्त एवं क्रियाविधि आदि को शिक्षा के क्षेत्र में काम में लाने का प्रयत्न किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह वह विषय है जिसमें विद्यार्थी के व्यवहार का शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।
- मनोविज्ञान की अनुप्रयुक्त (applied) शाखा, जिसका संबंध मुख्यतः सीखने तथा अभिप्रेरण के बारे में मनोवैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग करके विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता को बढ़ाना है।
- शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण आ जाना ही शिक्षा मनोविज्ञान है। जिसमें विद्यार्थी के व्यवहार का शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।
- **उत्पत्ति-** मनोविज्ञान की शाखा के रूप में शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति सन् 1900 में हुई।
- **जनक/पितामह-** थॉर्नडाइक (अमेरिका)
- **पुस्तक-** शिक्षा मनोविज्ञान (1903)
- थॉर्नडाइक, जुड, टर्मन, स्टेनली हॉल आदि के सतत प्रयासों से शिक्षा मनोविज्ञान ने सन् 1920 में स्पष्ट व निश्चित स्वरूप धारण किया।
- सही अर्थ में शिक्षा मनोविज्ञान का इतिहास 1880 ई. में फ्रांसिस गाल्टन द्वारा दिए गए योगदानों से प्रारम्भ होता है। गाल्टन ने वैयक्तिक विभिन्नता (individual differences) के अध्ययन पर अधिक बल डाला जिसका परिणाम यह हुआ कि व्यक्ति की मानसिक क्षमता (mental ability) के मापन की ओर लोगों का ध्यान गया। गाल्टन पहले ऐसे मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने व्यक्ति की मानसिक क्षमता को मापने के लिए एक मनोवैज्ञानिक परीक्षण (psychological test) का निर्माण किया था। इसके बाद जी. स्टेनले हाल (G. Stanley Hall, 1844-1924) ने प्रश्नावली के सहारे बच्चों के शैक्षिक व्यवहारों का अध्ययन कर लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया।
- शिक्षा और मनोविज्ञान को जोड़ने वाली कड़ी है- मानव व्यवहार।

शैक्षिक मनोविज्ञान की परिभाषाएँ

1. स्कीनर :-

(i) "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण एवं सीखने से संबंधित है।"

(ii) "शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक परिस्थितियों के अंतर्गत मानवीय व्यवहारों का अध्ययन करता है।"

2. **क्रो एण्ड क्रो :-** "शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने सम्बन्धी अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।"

3. **कॉलसनिक :-** "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धांत व अनुसंधानों का शिक्षा में प्रयोग है।"

4. **पील :-** "शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का विज्ञान है।"

5. **स्टीफन :-** "शिक्षा मनोविज्ञान, बालक के क्रमबद्ध शैक्षिक अभिवृद्धि एवं विकास का अध्ययन है।"

6. **बी. एन. झा -** "शिक्षा की प्रक्रिया पूर्णतया, मनोविज्ञान की कृपा पर निर्भर है।"

7. **सैन्ट्रोक -** "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की ऐसी शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखलाता है।"

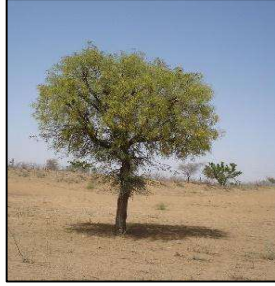
अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ. सं.
1.	राजस्थान के प्रतीक चिह्न	2-4
2.	राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र	5
3.	राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल	6-13
4.	राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी	14-16
5.	राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल इत्यादि	17-21
6.	राजस्थान के प्रमुख उद्योग	22-41
7.	राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था	42-79
8.	राजस्थान में फ्लैगशिप व जनकल्याणकारी योजनाएँ (नवीनतम संशोधन सहित)	80-93

राजस्थान के प्रतीक चिह्न

राज्य वृक्ष : 'खेजड़ी'

- खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम 'प्रोसोपिस-सिनेररिया' (Prosopis Cineraria) है।
- इस वृक्ष की पूजा दशहरे के पर्व पर की जाती है।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी व झुंझार बाबा का मंदिर बना हुआ होता है।
- स्थानीय भाषा में इसे 'सीमलो' कहते हैं।
- खेजड़ी की हरी फली-सांगरी, सूखी फली-खोखा व पत्तियों से बना चारा लूंग-लूम कहलाता है।
- खेजड़ी के वृक्ष को सेलोस्टर्न (कीड़ा) व ग्लाइकोडर्मा (कवक) नुकसान पहुँचाते हैं।
- 'रेगिस्तान का गौरव' अथवा 'थार का कल्पवृक्ष' नाम से प्रसिद्ध।
- इसे वर्ष 1983 में राज्य वृक्ष घोषित किया गया।
- खेजड़ी वृक्ष पर 5 जून, 1988 को 60 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया है।
- खेजड़ी बीकानेर के राठौड़ राजवंश का प्रतीक चिह्न भी है।
- खेजड़ी के लिए राज्य में सबसे पहले कुर्बानी अमृतादेवी के द्वारा 1730 ई. में दी गई। अमृता देवी रामो जी बिश्नोई की पत्नी थी। अमृता देवी द्वारा भाद्रपद शुक्ल दशमी को जोधपुर के खेजड़ली गाँव में 363 लोगों के साथ बलिदान दिया गया। इस समय जोधपुर का शासक अभयसिंह था। अभयसिंह के आदेश पर गिरधरदास के द्वारा 363 लोगों को मार दिया गया।
- खेजड़ी को तमिल भाषा में 'पेयमेय', कन्नड़ भाषा में 'बन्ना-बन्नी', सिंधी भाषा में 'धोकड़ा', बिश्नोई सम्प्रदाय के लोग 'शमी' तथा पंजाबी व हरियाणवी में 'जांटी' के नाम से जानते हैं।
- प्रतिवर्ष 12 सितम्बर को खेजड़ली दिवस मनाया जाता है।
- ऑपरेशन खेजड़ा कार्यक्रम वर्ष 1991 से चलाया जा रहा है।



राज्य पुष्प : 'रोहिड़ा का फूल'

- इसका वैज्ञानिक नाम 'टिकोमेला अंडुलेटा' (Tecomella Undulata) है।
- इसे वर्ष 1983 में राज्य पुष्प घोषित किया गया।
- इसे 'मरूशोभा' या 'रेगिस्तान का सागवान' भी कहा जाता है।
- मार्च - अप्रैल के महीने में इसके पुष्प खिलते हैं। इन पुष्पों का रंग गहरा केसरिया-हीरमीच पीला होता है।
- जोधपुर में रोहिड़े को 'मारवाड़ टीक' के नाम से जाना जाता है।
- रोहिड़ा की लकड़ी से बंदूक की बट बनाई जाती है।
- सर्वाधिक रोहिड़ा राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में देखा जा सकता है।



राज्य पशु : 'चिंकारा' एवं 'ऊँट'

चिंकारा

- इसका वैज्ञानिक नाम 'गजेला-गजेला' या 'गजेला बेनेट्टी' (Gazella Bennett) है।
- यह 'एन्टीलोप' प्रजाति का एक मुख्य जीव है।
- प्रदेश का राज्य पशु 'चिंकारा' सर्वाधिक 'मरु भाग' में पाया जाता है।
- 'चिंकारा' नाम से राजस्थान में एक तत्वाद्य यंत्र भी है।
- श्रीगंगानगर जिले का शुभंकर चिंकारा है।
- चिंकारा को वर्ष 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया।



ऊँट

- राज्य सरकार ने वर्ष 2014 में ऊँट को भी 'राज्य पशु' का दर्जा दे दिया है।
- ऊँट का वैज्ञानिक नाम 'कैमेलस ड्रोमेडरियस' (Camelus Dromedarius) है।
- ऊँट को मारने पर अब पूर्णतः रोक लग गई है एवं उसे विशेष संरक्षण मिला हुआ है। ऊँट वध निषेध अधिनियम दिसम्बर, 2014 में लाया गया था।
- ऊँट के प्रमुख आभूषण गोरबन्द, जीण, गिरबाण, चौरारस्यां और काठी है।
- बीकानेर जिले में ऊँट महोत्सव का आयोजन किया जाता है।
- ऊँटों के देवता के रूप में पाबूजी को पूजा जाता है।
- ऊँटों की देवी के रूप में अन्ता देवी को पूजा जाता है।
- सम गाँव जैसलमेर में ऊँटों की सवारी 'कैमल सफारी' प्रसिद्ध है।
- सर्पा रोग ऊँटों का एक रोग है।
- ऊँट को रेगिस्तान के जहाज के उपनाम से जाना जाता है।
- ऊँट की खाल पर सोने की नक्काशी उस्ता कला कहलाती है, जो बीकानेर जिले की प्रसिद्ध कला है।
- ऊँटों की कुर्बानी के लिए मुबारक महल, टोंक प्रसिद्ध है।



राज्य पक्षी : 'गोडावण'

- इसका वैज्ञानिक नाम 'कोरियोटिस-नाइग्रिसेप्स' (Choriotis Nigriceps) है।
- यह जैसलमेर जिले का शुभंकर भी है।
- गोडावण का प्रजनन केन्द्र जोधपुर जन्तुआलय है।
- गोडावण को वर्ष 1981 में राज्य पक्षी घोषित किया गया।
- नवम्बर, 1980 में केंद्र सरकार ने इसके लिए डाक टिकट जारी किया था।



- इसे 'ग्रेट इंडियन बस्टर्ड', सोहन चिड़िया, हुकना, तथा गुरायिन आदि के नाम से जाना जाता है।
- यह शर्मीला पक्षी गोडावण राजस्थान में 3 जिलों में सर्वाधिक देखा जा सकता है- मरुउद्यान (जैसलमेर, बाड़मेर), सोरसन (बाराँ) तथा सोंकलिया (अजमेर) में।
- रामदेवरा आखेट निषेध क्षेत्र में भी गोडावण पाया जाता है।
- IUCN की रेड डाटा बुक में गंभीर रूप से संकटग्रस्त पक्षी के रूप में तथा भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची-I में रखा गया है।
- गोडावण को हाड़ौती क्षेत्र सोरसन में 'माल मोरड़ी' के नाम से जाना जाता है।

राज्य खेल : 'बॉस्केटबॉल'

- दर्जा - 1948
- बॉस्केटबॉल पुरुष अकादमी - जैसलमेर
- बॉस्केटबॉल महिला अकादमी - जयपुर
- बॉस्केटबॉल मैदान को कोर्ट कहा जाता है।
- बॉस्केटबॉल खेल में प्रत्येक टीम में 5 - 5 खिलाड़ी होते हैं।
- राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी - सुरेन्द्र कटारिया, हनुमान सिंह, परमजीत सिंह एवं जोरावर सिंह।



राज्य हैरिटेज खेल : 'पोलो'

- पोलो खेल की शुरुआत भारत के मणिपुर राज्य से मानी जाती है।
- वर्ष 1859 में असम राज्य में प्रथम क्लब-कदार क्लब की स्थापना हुई थी।
- पोलो खेल का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय मैच वर्ष 1886 में इंग्लैण्ड तथा यू.एस. के मध्य खेला गया था।
- अन्तर्राष्ट्रीय पोलो संघ की स्थापना वर्ष 1930 में हुई।
- पोलो का पुराना नाम चौगान था।
- पोलो खेल में प्रत्येक टीम 4 - 4 खिलाड़ी होते हैं।
- अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित पोलो खिलाड़ी -
 1. महाराजा प्रेमसिंह - 1961
 2. ठाकुर किशन सिंह - 1963
 3. राजा हणूत सिंह - 1964



राज्य लोक वाद्य : 'अलगोजा'

- एक सुषिर वाद्ययंत्र है।
- अलगोजा बाँसुरी के समान होता है इसकी नली में चार से सात तक छेद किए जाते हैं जिनकी दूरी स्वरों की शुद्धता के लिए निश्चित होती है।
- प्रमुख वाद्यकार - घोघे खान (1982 में एशियाई खेलों में प्रस्तुति दी थी) व रामनाथ चौधरी (नाक से अलगोजा बजाते थे)



राज्य लोक नृत्य : 'घूमर'

- घोषणा - 1986 में
- घूमर नृत्य मांगलिक अवसरों, राष्ट्रीय अवसरों तथा गणगौर पर्व के अवसर पर किया जाता है।
- घूमर नृत्य में ढोल, नगाड़ा, शहनाई आदि वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- लहंगों के घेर को, जो वृत्ताकार रूप में फैलता है, 'घुम्म' कहते हैं।
- इस नृत्य की उत्पत्ति 'मध्य एशिया' से हुई है।
- इस नृत्य में महिलाएँ 120 कली तथा 80 कली का घाघरा पहनकर इस नृत्य को करती हैं।
- इस नृत्य के उपनाम -
 1. रजवाड़ी नृत्य
 2. नृत्यों की आत्मा
 3. सामंती नृत्य
 4. नृत्यों का सिरमौर
 5. मंगलमुखी नृत्य
- नोट : गणगौर घूमर अकादमी - जयपुर में वर्ष 1986 में स्थापित की गई।
- घूमर नृत्य के प्रकार -
 1. लूर - गरासिया महिलाएँ इस नृत्य को करती हैं।
 2. झूमरिया - यह बालिकाओं द्वारा किया जाता है।
 3. घूमर - राजपूत महिलाओं द्वारा इस नृत्य को किया जाता है।



राज्य गीत : "केसरिया बालम आओ नी पधारो म्हारे देश"



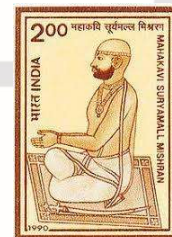
- सर्वाधिक बार - अल्लाह जिलाई बाई (बीकानेर) ने गाया।
- यह गीत मांड गायिकी में गाया जाता है।
- इस गीत को सर्वप्रथम उदयपुर की मांगीबाई के द्वारा गाया गया।

राज्य का शास्त्रीय नृत्य : 'कथक'



- घराना - जयपुर
- प्रवर्तक - भानु जी महाराज

राज्य कवि : 'सूर्यमल्ल मीसण/मिश्रण'



- हाड़ा राजा, रामसिंह द्वितीय के दरबारी कवि थे।
- प्रमुख ग्रंथ - वीर सतसई, वंश भास्कर, छंद मयुख, राम रंजात

अनुक्रमणिका		
क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
A. शैक्षिक परिदृश्य		2-15
1.	शिक्षण अधिगम के नवाचार	16-38
2.	राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार	39-44
3.	विद्यालय प्रबंधन एवं संबंधित समितियाँ	45-55
4.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में)	56-63
B. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम		
5.	निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 : प्रावधान एवं क्रियान्विति	64-71
6.	राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011	72-77
7.	राजस्थान के मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश	78-81
C. सूचना तकनीकी		
8.	सूचना प्रौद्योगिकी के आधार	82-131
9.	सूचना प्रौद्योगिकी उपकरण (टूल्स)	132-135
10.	सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग	136-141
11.	सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभाव	142-144



A

शैक्षिक परिदृश्य

भारतीय का शैक्षिक परिदृश्य

- राजस्थान राज्य की स्थापना रियासतों के विलीनीकरण के फलस्वरूप वर्ष 1949 में हुई। रियासत काल में शिक्षा की कार्य प्रणाली एवं प्रबन्धन रियासतवार पृथक-पृथक था।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य रूप से देश के सभी बच्चों को उपलब्ध करवाने का संकल्प लिया गया था। इसी संकल्प की परिणति के रूप में 'निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 दिनांक 1 अप्रैल, 2010 से सम्पूर्ण राष्ट्र में लागू हुआ। राजस्थान में भी तत्सम्बन्धी क्रियान्वयन हेतु 'निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 अस्तित्व में आया और दिनांक 29 मार्च, 2011 से प्रभावी हुए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 (संशोधित 1992) के अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित तीन आयामों पर बल दिया गया-**
 - सार्वजनिक पहुँच (Access) एवं नामांकन।
 - 14 वर्ष की आयु तक सार्वजनिक ठहराव (Retention)।
 - शिक्षा की गुणवत्ता (Quality in Education) में पर्याप्त सुधार।
- इसे आगे बढ़ाते हुए 34 वर्ष पश्चात नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 10+2 के स्थान पर **5+3+3+4** की एक नई व्यवस्था का पुनर्गठन किया गया है, जिसमें निम्नलिखित **मूलभूत सिद्धान्तों** को शामिल किया गया है-
 - हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना।
 - बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना।
 - रचनात्मकता और तार्किक सोच विकसित करना।
 - नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों का विकास।
 - तकनीकी के यथा संभव उपयोग पर जोर।
 - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्तर का शोध।
 - भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना।
- संवैधानिक दायित्वों एवं नीतियों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रारम्भिक शिक्षा को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है।
- जोमटियन (थाईलैण्ड) में 1990 में हुए 'विश्व शिक्षा सम्मेलन' में यह प्रतिबद्धता की गयी थी कि प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण एवं बच्चों, युवाओं व प्रौढ़ों को सीखने का अवसर प्रदान कर सभी लोगों की मूलभूत आवश्यकता को पूरा किया जायेगा।
- वर्ष 2000 में डकार (सेनेगल) में हुए '**विश्व शिक्षा सम्मेलन**' में सबके लिए शिक्षा (Education for All) के क्षेत्र में हुई प्रगति की समीक्षा की गई एवं भविष्य के लिए फ्रेमवर्क तैयार किया गया। इस फ्रेमवर्क में बाल्यावस्था पूर्व देखभाल एवं प्रारम्भिक शिक्षा, किशोरों की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, जेण्डर समता एवं गुणवत्ता में सुधार सम्मिलित है।

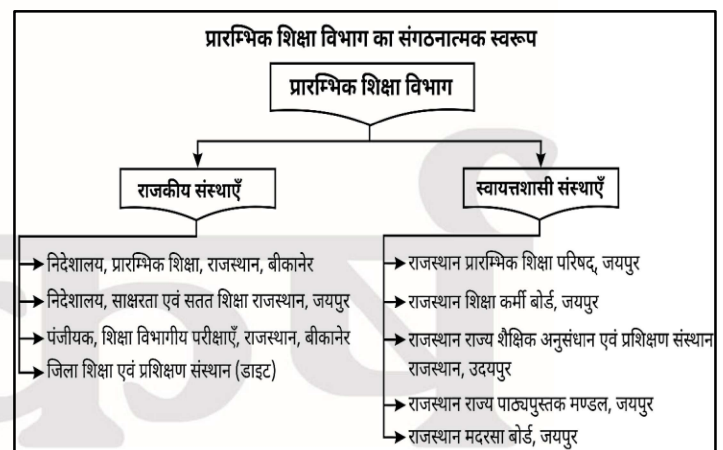
राजस्थान का शैक्षिक परिदृश्य

- पूर्व से ही राजस्थान में लोक शिक्षा एक परम्परा रही है। शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना राजाओं या समुदाय द्वारा (हिन्दू पाठशाला या मुस्लिम मकतब) की गई परन्तु इसमें भागीदारी बहुत सीमित रहती थी। राजाओं द्वारा स्थापित संस्थाओं में राजघरानों या उच्च घरानों तक तथा समुदाय द्वारा स्थापित संस्थाएँ उच्च वर्ग तक सीमित थी।
- राजस्थान में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत 19 वीं सदी में हुई जबकि **1844 में लोक शिक्षण विभाग** की स्थापना की गई।

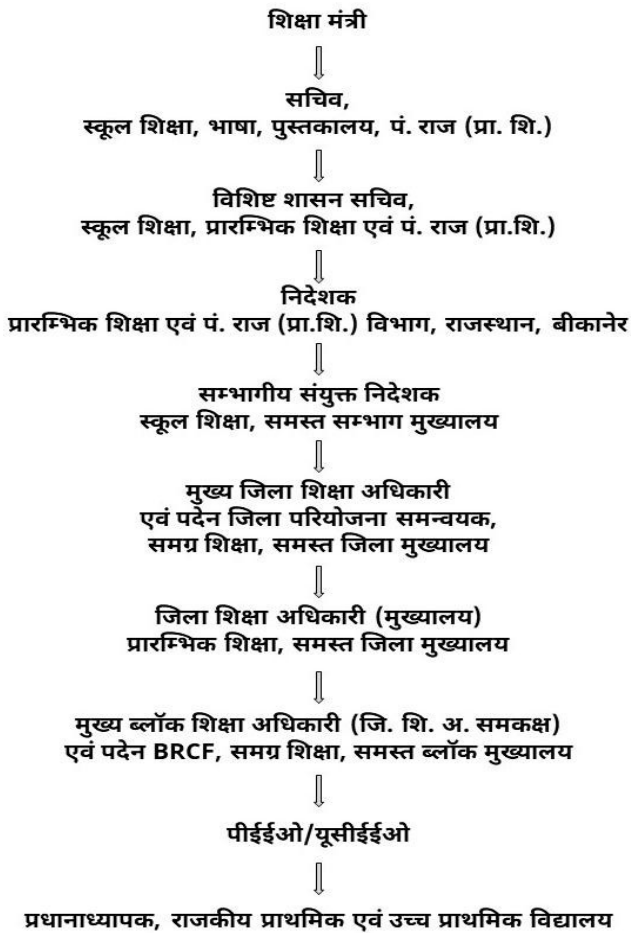
- राज्य सरकार ने शिक्षा व्यवस्था को संघीय स्वरूप देने एवं शिक्षा के सुसंचालन हेतु वर्ष 1950 में बीकानेर में निदेशालय, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा की स्थापना की। राज्य में वर्ष 1959 से पंचायतीराज व्यवस्था लागू होने के पश्चात् ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों के प्रबन्धन का दायित्व ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के अधीन जिला परिषदों एवं पंचायत समितियों को सौंप दिया गया। शिक्षा में गुणवत्ता एवं कुशल शैक्षिक प्रबन्धन को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 1997 में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर का विभाजन कर प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के पृथक-पृथक राज्य स्तरीय कार्यालयों की स्थापना की गई। तदनुसार 1 जनवरी, 1998 से मौजूदा विभाग (प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान) बीकानेर में संचालित है।
- वर्ष 2001 से ग्रामीण क्षेत्र की प्राथमिक शिक्षा का कार्य भी कार्यालय, निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा को सौंप दिया गया। दिनांक 2 अक्टूबर, 2010 से सम्पूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा पंचायतीराज संस्थाओं को स्थानान्तरित कर दी गई, किन्तु पैतृक विभाग शिक्षा विभाग ही रखा गया। पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के क्षेत्राधीन तथा राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, साक्षरता एवं सतत् शिक्षा, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के सहयोगार्थ संचालित हैं।

राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा

- वर्ष 1949 में रियासतों के विलीनीकरण के फलस्वरूप नवगठित राजस्थान राज्य में स्कूल शिक्षा का विभाग, निदेशालय, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर में स्थापित हुआ। तात्कालिक आवश्यकताओं के मद्देनजर स्कूल शिक्षा विभाग का प्रारम्भिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा के रूप में पृथक्करण वर्ष 1997 में हुआ, तब से लेकर अनवरत प्रारम्भिक शिक्षा विभाग बालक-बालिकाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण के लिए एवं उसे युगानुकूल समुचित शिक्षा देने के लिए निम्नांकित दायित्वों का निर्वहन करता रहा है-
 - (1) प्रारम्भिक शिक्षा नीति का निर्धारण एवं क्रियान्वयन।
 - (2) प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबन्धन एवं प्रशासन।
 - (3) प्रारम्भिक शिक्षा का विस्तार।
 - (4) अनौपचारिक शिक्षा एवं साक्षरता को बढ़ावा।
 - (5) प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक गतिविधियों का विकास।
 - (6) प्रारम्भिक शिक्षा पर धनराशि का नियोजन।



प्रारम्भिक शिक्षा विभाग का प्रशासनिक नियन्त्रण



राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा की संस्थाएँ :-

- राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अधीन दो प्रकार की संस्थाएँ कार्यरत हैं जैसे- राजकीय संस्थाएँ तथा स्वायत्तशासी संस्थाएँ, जो निम्न प्रकार से हैं -
- (1) **राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर :-**
 - प्रारम्भिक शिक्षा से संबंधित ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालय तथा समस्त अन्य प्राथमिक विद्यालय योजना, प्रशासन, प्रबोधन, कार्मिक प्रबंधन, परीक्षाएँ, प्रकाशन, राज्य एवं केंद्रीय योजनाओं का क्रियान्वयन और शिक्षा संबंधी आँकड़ों का संकलन।
 - शिक्षा निदेशालय का मुख्या- निदेशक (आई.ए.एस.) होता है, जो प्रारम्भिक शिक्षा का विभागाध्यक्ष व प्रबंधन कर्ता होता है।
 - प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नेतृत्व में निदेशालय स्तर पर अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन), अतिरिक्त निदेशक प्रारम्भिक (शैक्षिक), संयुक्त निदेशक, उप निदेशक, जिला शिक्षा अधिकारी एवं अन्य अधिकारी कार्यरत हैं।
- (2) **पंजीयक, शिक्षा विभागीय परीक्षाएँ, बीकानेर :-**
 - यह कार्यालय राज्य सरकार के प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अधीनस्थ स्थापित एवं संचालित एक राज्य स्तरीय कार्यालय है।
 - प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों की अर्हता परीक्षाओं का आयोजन, मूल्यांकन एवं परीक्षा परिणामों की घोषणा सम्बन्धी कार्य। कक्षा 5 के लिए 'प्राथमिक शिक्षा अधिगम स्तर मूल्यांकन' व कक्षा 8 के लिए 'प्रारम्भिक शिक्षा पूर्णता प्रमाण पत्र परीक्षा', राज्य समान परीक्षा का आयोजन एवं विभाग स्तरीय अन्य प्रवेश व छात्रवृत्ति परीक्षाओं का आयोजन।

- इस कार्यालय द्वारा एक परीक्षा एजेन्सी की तरह कार्य किया जाता है।
- मूलतः इस कार्यालय के द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण, जिसे वर्तमान समय में 'अध्यापक शिक्षा' कहते हैं, के लिए द्विवर्षीय प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम (बी.एस.टी.सी.) की अर्हता परीक्षाएँ (Qualifying Examinations) करवाई जाती रही है।
- वर्तमान समय में इस पाठ्यक्रम का नाम प्रोन्नति के साथ डी.एल.एड. (Diploma in Elementary Education) अर्थात् 'डिप्लोमा इन एलिमेंट्री एजुकेशन' हो गया है, जो कि देश के सभी राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में वर्ष 2014 के बाद एक समान है।
- उप निदेशक पद के समकक्ष अधिकारी बतौर पंजीयक इस कार्यालय के कार्यालयाध्यक्ष होते हैं।
- परीक्षा आयोजन हेतु संचालित इस राज्य स्तरीय राजकीय अभिकरण द्वारा निम्नांकित परीक्षाओं का आयोजन करने एवं परिणाम घोषित कर डिप्लोमा जारी करने का मूल कार्य किया जा रहा है-
 - डी.एल.एड.-** अध्यापक शिक्षा का द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम
 - डी.पी.एड. -** अध्यापक शिक्षा में द्विवर्षीय शारीरिक शिक्षा का डिप्लोमा पाठ्यक्रम
 - संगीत प्रभाकर -** द्विवर्षीय संगीत अध्यापक शिक्षा डिप्लोमा पाठ्यक्रम
 - संगीत भूषण -** एक वर्षीय संगीत अध्यापक शिक्षा का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम
- (3) **राजस्थान मदरसा बोर्ड, जयपुर :-**
 - 27 जनवरी, 2003 को राजस्थान मदरसा बोर्ड, जयपुर में स्थापित प्रारम्भिक शिक्षा विभाग के अधीन एक स्वायत्त शासी संस्था के रूप में की गई। इन मदरसों में मुस्लिम समुदाय के बच्चे दीनी तालिम हासिल करते हैं।
 - उद्देश्य :-** इन मदरसों में दीनी तालिम दी जाती है। ये बच्चे आधुनिक शिक्षा से वंचित रह रहे हैं। इस कारण मदरसों में आधुनिक शिक्षा दिए जाने के उद्देश्य से राजस्थान मदरसा बोर्ड गठित किया गया। इन मदरसों को भौतिक व मानवीय संसाधन उपलब्ध करवाना इसका उद्देश्य है। वर्तमान में मदरसा बोर्ड का एक अध्यक्ष (राज्य सरकार द्वारा मनोनीत) तथा 15 सदस्य मनोनीत होते हैं। इसका स्वयं का कोई स्टाफ नहीं होता है।
- (4) **राजस्थान पंचायती राज निदेशालय, जयपुर :-**
 - पंचायत राज विभाग राजस्थान की प्राथमिक शिक्षा का प्रबंधन शिक्षा विभाग से मिलकर करता है। राष्ट्रीय पोषाहार कार्यक्रम (एम.डी.एम.) का क्रियान्वयन करना था परन्तु वर्तमान में सत्र 2017-18 से एम.डी.एम. कार्यक्रम प्रारम्भिक शिक्षा विभाग को दे दिया गया है।
- (5) **राजस्थान साक्षरता एवं सतत शिक्षा निदेशालय, जयपुर :-**
 - इसके द्वारा संपूर्ण साक्षरता, उत्तर साक्षरता एवं सतत शिक्षा कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।
 - राजस्थान में इसके द्वारा SLMA (State Literacy Mission Authority) द्वारा निम्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं-
 - साक्षर भारत कार्यक्रम -** यह कार्यक्रम MHRD द्वारा 15 वर्ष से 35 आयु के प्रौढ़ों को साक्षर करने के लिए 8 सितम्बर, 2009 को 'बुनियादी साक्षरता कार्यक्रम' के रूप में चलाया जा रहा है। दूसरा कार्यक्रम 'Equivalency Programme' 2004 से सीकर व अजमेर जिलों से 'पायलट प्रोजेक्ट' के रूप में चलाया गया।
 - नवाचारी पहल
 - महात्मा गाँधी पुस्तकालय
 - महिला शिक्षण विहार (15-30 वर्ष आयु)
 - व्यक्तिगत Beneficiary स्कीम।
 - पढ़ना-लिखना अभियान

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय-वस्तु	पृष्ठ सं.
हिन्दी		
1.	हिन्दी वर्णमाला ज्ञान	3-7
2.	शब्द विचार (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय)	8-29
3.	विकारी शब्द (लिंग, वचन, काल, कारक, वाच्य एवं विकारी शब्दों का रूपांतरण)	30-44
4.	शब्द प्रकार- (i) उत्पत्ति के आधार पर (तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी व संकर शब्द) (ii) रचना के आधार पर (रूढ़, यौगिक व योगरूढ़) (iii) अर्थ के आधार पर (एकार्थी, अनेकार्थी, विलोम, पर्यायवाची, वाक्यांश के लिए एक शब्द, युग्म-शब्द इत्यादि)	45-104
5.	संधि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय	105-134
6.	शब्द शुद्धि एवं वाक्य शुद्धि	135-146
7.	वाक्य विचार	147-151
8.	विराम चिह्न	152-155
9.	मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	156-174
10.	शब्द शक्ति	175-178
11.	अपठित गद्यांश एवं पद्यांश	179-180
12.	पारिभाषिक शब्दावली	181-186
हिन्दी शिक्षण विधियाँ		
1.	हिन्दी भाषा की शिक्षण विधियाँ	187-206
2.	भाषायी कौशल एवं भाषायी कौशलों का विकास	207-214
3.	हिन्दी भाषा शिक्षण के उपागम	215-217
4.	हिन्दी शिक्षण में चुनौतियाँ	218
5.	हिन्दी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उनका उपयोग	219-224
6.	हिन्दी शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ	225-234
7.	निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	235-239

हिन्दी वर्णमाला ज्ञान

ध्वनि

- मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है, जिसे श्रोता अपने कानों से ग्रहण करता है।
- श्रवणीयता ध्वनियों का सामान्य गुण है।
- ध्वनि को सिर्फ बोला एवं सुना जा सकता है। अतः ध्वनि भाषा का लघुतम श्रव्य खण्ड है।

वर्ण

- वर्ण लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई है तथा भाषा का लघुतम दृश्य खंड है।
- स्वर एवं स्वर रहित व्यंजन वर्ण कहलाते हैं।
- ध्वनियों को लिपिबद्ध करना भी वर्ण कहलाता है।
- दर्शनीयता वर्णों का सामान्य गुण है।
- वर्णों को लिखा, पढ़ा, देखा एवं बोला भी जा सकता है।
- **किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार-** वर्ण भाषा की वह सबसे छोटी इकाई है, जिसे आगे ओर विभाजित नहीं किया जा सकता है; जैसे- अ, क्, इ, च् इत्यादि।

वर्ण और ध्वनि में अंतर

कमला



ध्वनि- 3 (क, म, ला)

वर्ण- 6 (क् + अ + म् + अ + ल् + आ)

- **वर्णमाला-** वर्णों का व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है; जैसे- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,.....।

अक्षर

- अ + क्षर (नाश नहीं) 'न क्षरति इति अक्षरम्' जिसका नाश न हो।
- अक्षर को शाश्वत, नित्य एवं सार्वभौमिक मानते हुए ब्रह्मा का पर्यायवाची माना जाता है।
- स्वर एवं स्वर सहित व्यंजन अक्षर कहलाते हैं।
- जिस ध्वनि समूह का उच्चारण एक ही श्वास में हो जाए, उसे अक्षर कहते हैं; जैसे- ना, जा, आ, इ, हाँ इत्यादि।
- अक्षर को हम तोड़-तोड़कर नहीं बोल सकते हैं; जैसे- 'का' को क् आ नहीं 'का' को हम सीधा एक श्वास में 'का' ही बोलेंगे।

शब्द

- वर्णों या अक्षरों का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह शब्द कहलाता है।
- शब्द सार्थकता के आधार पर भाषा की लघुतम श्रव्य एवं लिखित इकाई है।
- शब्द तब तक ही शब्द है, जब तक वह अकेला है; जैसे ही शब्द का वाक्य में प्रयोग हो जाता है तो वह पद कहलाने लगता है।

विशेष- शब्द सार्थक तो होता है; परन्तु जब तक इसका वाक्य में प्रयोग न किया जाए तब तक निश्चित अर्थ की प्राप्ति असंभव है।

पद

- वर्णों या अक्षरों का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह शब्द कहलाता है तथा जैसे ही शब्द का वाक्य में प्रयोग कर दिया जाए, तो वह शब्द पद कहलाता है।
- वाक्य-विश्लेषण का मुख्य आधार पद होता है न कि शब्द।

विशेष- पदों का अर्थ निश्चित होता है; क्योंकि वाक्य में प्रयोग हो जाने से उस पद का संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों के साथ स्थापित हो जाता है।

वाक्य

- पदों का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह जिससे पूर्ण अभिलषित अर्थ की प्राप्ति हो तथा योग्यता, आकांक्षा, सन्निधि एवं सार्थकता से युक्त हो, उसे वाक्य कहते हैं।
- वाक्य, व्याकरण की दृष्टि से भाषा की सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण इकाई है।

स्वर

- वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती अर्थात् स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती हैं।

अथवा

वे वर्ण जिनके उच्चारण में फेफड़ों से छोड़े जाने वाली वायु वाग्यंत्र (वाक् + यंत्र) के किसी अवयव को स्पर्श किए बिना स्वतंत्र रूप से बाहर निकल जाती है, स्वर कहलाते हैं। स्वरों की संख्या = 11

व्यंजन

- वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात् स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।

अथवा

वे वर्ण जिनके उच्चारण में फेफड़ों से छोड़े जाने वाली वायु वाग्यंत्र (वाक् + यंत्र) के किसी अवयव को स्पर्श करते हुए बाहर निकलती है, व्यंजन कहलाते हैं।

- **व्यंजनों की संख्या- 33**

(i) क से म तक = 25 (स्पर्श व्यंजन)

(ii) य, र, ल, व = 4 (अन्तःस्थ व्यंजन)

(iii) श, ष, स, ह = 4 (ऊष्म/संघर्षी व्यंजन)

अतः कुल व्यंजन 25 (स्पर्श व्यंजन) + 4 (अन्तःस्थ व्यंजन) + 4 (ऊष्म व्यंजन) = 33

मात्रा

किसी भी ध्वनि के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
स्वरों की मात्रा	×	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

विशेष- मात्राओं की संख्या 10 होती है, क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।

विशेष

हिन्दी वर्णमाला में वर्णों की संख्या 44 (11 स्वर + 33 व्यंजन) होती है, लेकिन कुल वर्णों की संख्या 52 हैं।

(i) स्वर- 11

(ii) व्यंजन- 33

(iii) अयोगवाह- 2 (अं, अः)

(iv) उत्क्षिप्त- 2 (ड़, ढ़,)

(v) संयुक्त व्यंजन- 4 (क्ष, त्र, ज्ञ, श्र)

अतः कुल वर्ण 11 (स्वर) + 33 (व्यंजन) + 2 (अयोगवाह) + 2 (उत्क्षिप्त) + 4 (संयुक्त व्यंजन) = 52

● हिन्दी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई हैं।

● हिन्दी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार भी कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई हैं।

स्वर एवं व्यंजन में अंतर

स्वर	व्यंजन
1. जो ध्वनियाँ स्वयं उच्चरित होती है, स्वर कहलाती हैं।	1. जो ध्वनियाँ स्वरों की सहायता से उच्चरित होती है, व्यंजन कहलाती हैं।
2. स्वर सभी घोष होते हैं।	2. व्यंजन घोष एवं अघोष दोनों होते हैं।
3. स्वर सभी अल्पप्राण होते हैं।	3. व्यंजन अल्पप्राण एवं महाप्राण दोनों होते हैं।
4. मात्रा केवल स्वरों की ही होती हैं।	4. व्यंजनों की मात्रा नहीं होती हैं।
5. स्वर स्वराघात वहन कर सकते हैं।	5. व्यंजन स्वराघात वहन नहीं कर सकते हैं।

स्वरों का वर्गीकरण

1	उच्चारण अवधि के आधार पर	1	ह्रस्व स्वर
		2	दीर्घ स्वर
		3	प्लुत स्वर
2	ओष्ठाकृति के आधार पर	1	वृत्ताकार स्वर
		2	अवृत्ताकार स्वर
3	जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर	1	अग्र स्वर
		2	मध्य स्वर
		3	पश्च स्वर
4	मुखाकृति के आधार पर	1	संवृत्त स्वर
		2	अर्द्ध संवृत्त स्वर
		3	विवृत्त स्वर
		4	अर्द्ध विवृत्त स्वर
5	स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर	1	मूल स्वर
		2	संयुक्त स्वर
6	जाति के आधार पर	1	सजातीय स्वर
		2	विजातीय स्वर

7	उच्चारण स्थान के आधार पर	1	कण्ठ्य स्वर
		2	तालव्य स्वर
		3	ओष्ठ्य स्वर
		4	मूर्धन्य स्वर
		5	कण्ठतालव्य स्वर
		6	कण्ठोष्ठ्य स्वर
8	नासिका के आधार पर	1	निरनुनासिक
		2	अनुनासिक

उच्चारण अवधि के आधार पर

- ह्रस्व स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं; जैसे- **अ, इ, उ, ऋ (4)**
विशेष- इन्हें लघु स्वर, मूल स्वर और एकमात्रिक स्वर भी कहते हैं।
- दीर्घ स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में दुगुना समय लगता है अर्थात् दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं; जैसे- **आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (7)**
विशेष- इन्हें दीर्घ स्वर, सन्ध्य स्वर, गुरु स्वर और द्विमात्रिक स्वर भी कहते हैं।
- प्लुत स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की तुलना में तिगुना समय लगता है अर्थात् तीन मात्रा का समय लगता है, वह प्लुत या त्रिमात्रिक स्वर कहलाते हैं।
ये कोई अलग से स्वर नहीं होते हैं बल्कि दीर्घ स्वर के पश्चात् सामान्यतः **३** या **५** का चिह्न लगाकर बनाए जाते हैं; जैसे- ओ३म, रा५म

ओष्ठाकृति के आधार पर

- वृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं; जैसे- **उ, ऊ, ओ, औ**
- अवृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठ वृत्त के समान गोल न होकर फैले रहते हैं, अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं; जैसे- **आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ**
विशेष- 'अ' स्वर के उच्चारण में होठ उदासीन रहते हैं। अतः इसे उदासीन स्वर कहा जाता है।

जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर

- अग्र स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशील रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं; जैसे- **इ, ई, ऋ, ए, ऐ**
- मध्य स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाता है; जैसे- **अ**
- पश्च स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग अर्थात् पिछला भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं; जैसे- **आ, उ, ऊ, ओ, औ**

मुखाकृति के आधार पर

- संवृत्त स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद रहता है अर्थात् मुख सबसे कम खुलता (लगभग बंद ही) है, संवृत्त स्वर कहते हैं; जैसे- **इ, ई, उ, ऊ, ऋ**
- अर्द्ध संवृत्त स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत्त स्वरों की तुलना में थोड़ा ज्यादा खुलता है, अर्द्ध संवृत्त स्वर कहलाते हैं; जैसे- **ए, ओ**

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	तृतीय श्रेणी शिक्षक Level-II (हिन्दी) - 2022 (सामान्य शिक्षा) दिनांक : 26 फरवरी, 2023	2-8
2.	तृतीय श्रेणी शिक्षक Level-II (हिन्दी) - 2025 (संस्कृत शिक्षा) दिनांक : 19 जनवरी, 2026	9-24



B.No.08

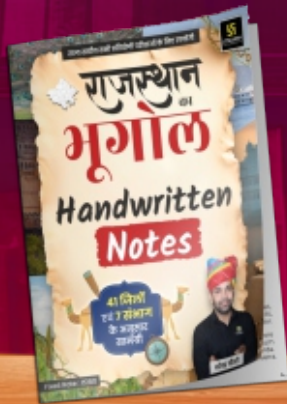
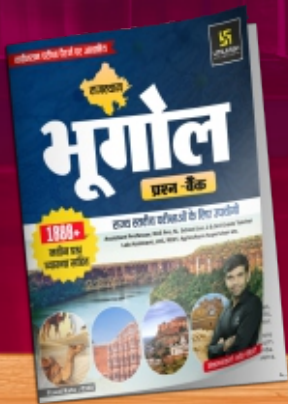
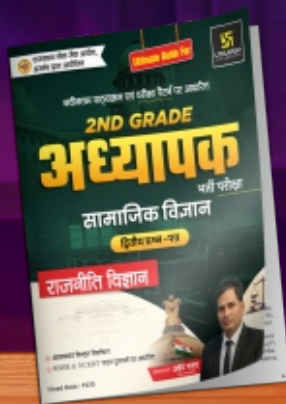
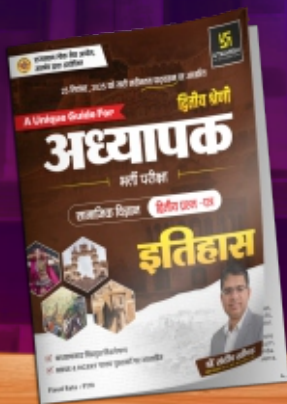
060426

तृतीय श्रेणी शिक्षक Level-II (हिन्दी) – 2022 (सामान्य शिक्षा)
दिनांक : 26 फरवरी, 2023

1. भडला सोलर पार्क स्थित है-
(a) जैसलमेर
(b) जोधपुर
(c) जालोर
(d) झालावाड़ [b]
2. बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् की स्थापना कब हुई?
(a) 1936 में
(b) 1940 में
(c) 1942 में
(d) 1945 में [c]
3. 'हर रौ हिंडोळौ' कद गायो जावै?
(a) किणी रै जलम माथै
(b) किणी रै विदाई माथै
(c) किणी री मिरतू माथै
(d) तिवार माथै [c]
4. 'नरमा' किस फसल की किस्म है?
(a) गेहूँ
(b) चावल
(c) कपास
(d) मक्का [c]
5. 'बोल भारमली' रा रचनाकार है-
(a) मेघराज मुकुल
(b) नेमनारायण जोशी
(c) महावीरप्रसाद जोशी
(d) सत्यप्रकाश जोशी [d]
6. कृषि विभाग, राजस्थान के मृदा वर्गीकरण के अनुसार 'जिप्सीफेरस' मृदा में पाई जाती है।
(a) अजमेर
(b) बीकानेर
(c) कोटा
(d) जोधपुर [b]
7. वह नदी जो 'वन की आशा' के नाम से भी जानी जाती है-
(a) लूनी नदी
(b) बनास नदी
(c) माही नदी
(d) बाणगंगा नदी [b]
8. राजस्थानी काव्य में 'डांखळा' नांव सूँ नवौ काव्य-रूप चलायनै घणा चावा हुआ-
(a) किशोर कल्पनाकांत
(b) मोहन आलोक
(c) कल्याणसिंह राजावत
(d) रघुराजसिंह हाड़ा [b]
9. 'हरियाली अमावस्या' का पर्व किस माह में मनाया जाता है?
(a) फाल्गुन अमावस्या
(b) श्रावण अमावस्या
(c) भाद्रपद अमावस्या
(d) आषाढ़ अमावस्या [b]
10. प्रसिद्ध चित्रकार 'साहिब्राम' किस चित्रकला शैली से संबंधित है?
(a) नाथद्वारा शैली
(b) किशनगढ़ शैली
(c) जयपुर शैली
(d) बूंदी शैली [c]
11. राजस्थान में स्त्रियों द्वारा लहरिया किस अवसर पर पहना जाता है?
(a) सावनी तीज पर
(b) कजली तीज पर
(c) आखा तीज पर
(d) रामनवमी पर [a]
12. वर्ष 2011 की जनगणनानुसार राजस्थान में वह जिला, जहाँ शहरी जनसंख्या राज्य में सर्वाधिक रही, है-
(a) जयपुर
(b) जोधपुर
(c) कोटा
(d) अजमेर [c]
13. किण संत री वाणियां रो संग्रै 'अणभै वाणी' रै नांव सूँ जाण्यो जावै?
(a) श्री रामचरण जी
(b) चरणदास जी
(c) दीन दरवेश
(d) पीपाजी [a]
14. एक जैसे नौ महल किस किले में बने हुए हैं?
(a) तारागढ़
(b) चित्तौड़गढ़
(c) नाहरगढ़
(d) गागरोन [c]
15. जून से सितम्बर माह में वर्षा में अधिकतम भिन्नता जिले में अभिलिखित की जाती है।
(a) जालोर
(b) जैसलमेर
(c) बीकानेर
(d) श्रीगंगानगर [b]
16. राजस्थान के किस क्षेत्र में रममत अधिक प्रसिद्ध है?
(a) जालोर
(b) जोधपुर
(c) बीकानेर
(d) नागौर [c]
17. निम्नलिखित में से राजस्थान के किस जिले में आई.एस.एफ.आर.-2021 के अनुसार वन क्षेत्र सर्वाधिक है?
(a) अलवर
(b) बारौ
(c) उदयपुर
(d) कोटा [c]

18. राजस्थान में 1857 की क्रांति की शुरुआत कहाँ से हुई?
(a) नसीराबाद
(b) एरिनपुरा
(c) खेरवाड़ा
(d) नीमच [a]
19. पश्चिमी राजस्थानी रो चावौ नांव छै-
(a) जयपुरी
(b) मालवी
(c) मारवाड़ी
(d) मेवाती [c]
20. भरतपुर प्रजामण्डल कहाँ स्थापित किया गया था?
(a) भरतपुर
(b) हिसार
(c) रेवाड़ी
(d) नदबई [c]
21. निम्नांकित में से राजस्थान में जायद की फसल की सही अवधि कौन-सी है?
(a) मार्च से जून
(b) जून से सितम्बर
(c) अक्टूबर से दिसम्बर
(d) जनवरी से मार्च [a]
22. रूपारेल नदी का उद्गम होता है-
(a) उदयनाथ
(b) रघुनाथगढ़
(c) कुम्भलगढ़
(d) राजोरगढ़ [a]
23. राजस्थान के 'आदिवासियों का कुंभ' किस मेले को कहा जाता है?
(a) तेजाजी मेला
(b) बेणेश्वर मेला
(c) जैसलमेर मेला
(d) पुष्कर मेला [b]
24. मल्लीनाथजी पशु मेला कब प्रारंभ होता है?
(a) चैत्र कृष्ण एकादशी
(b) चैत्र शुक्ल एकादशी
(c) चैत्र कृष्ण नवमी
(d) चैत्र अमावस्या [a]
25. कोलायत झील शहर के समीप स्थित है।
(a) जोधपुर
(b) उदयपुर
(c) बीकानेर
(d) जयपुर [c]
26. 'बिज्जी' किस साहित्यकार का उपनाम है?
(a) कन्हैयालाल सेठिया
(b) दुरसा आढ़ा
(c) बावजी चतुरसिंह
(d) विजयदान देथा [d]
27. कुम्भलगढ़ दुर्ग का प्रारंभिक संस्थापक कौन था?
(a) मान मौर्य
(b) राणा लाखा
(c) कुंवर पृथ्वीराज
(d) सम्प्रति [d]
28. 'बीसलदेव रास' की कथा में नायक-नायिका हैं-
(a) राजा बीसलदेव अर रांणी राजमती
(b) राजा बीसलदेव अर रांणी तारामती
(c) राजा बीसलदेव अर रांणी भागमती
(d) राजा हरिश्चन्द्र अर रांणी तारामती [a]
29. गणेश्वर सभ्यता किस नदी के किनारे स्थित है?
(a) आयड़ नदी
(b) बनास नदी
(c) कांतली नदी
(d) कोठारी नदी [c]
30. पर्यटन स्थल 'चाँद बावड़ी' कहाँ अवस्थित है?
(a) धौलपुर
(b) भानगढ़
(c) आभानेरी
(d) तलवाड़ा [c]
31. राजस्थान का खीचन गाँव जाना जाता है-
(a) कुरजां
(b) चरस
(c) साइबेरियन सारस
(d) तिलोर [a]
32. राजस्थान में कौन-सी मृदा में क्रोमोस्टर्ट्स उपमृदाकण का विशेष महत्त्व है?
(a) वर्टीसोल्स
(b) एरिडीसोल्स
(c) इन्सेप्टिसोल्स
(d) अल्फीसोल्स [a]
33. राजस्थानी में रामायण का रचनाकार है-
(a) सायांजी
(b) दुरसाजी
(c) मेहोजी
(d) नैणसी [c]
34. राजस्थान में स्वर्ण अयस्क के भण्डार मुख्यतः जिले में अनुमानित किए गए हैं।
(a) बाँसवाड़ा
(b) प्रतापगढ़
(c) राजसमंद
(d) डूंगरपुर [a]
35. डूंगरपुर अर बाँसवाड़ा खेतर की मुख्य बोली है-
(a) वागड़ी
(b) राठी
(c) शेखावाटी
(d) राजावाटी [a]
36. जोधपुर के राठौड़ राजवंश का संस्थापक कौन था?
(a) सीहा
(b) सांगा
(c) जोधा
(d) बीका [a]
37. बाँसवाड़ा जिले के सिवानिया, कालाखूँटा, घाटिया क्षेत्र खनिज के भण्डारों के लिए जाने जाते हैं।
(a) टंगस्टन
(b) चाँदी
(c) सीसा-जस्ता
(d) मैंगनीज [d]

उत्कर्ष प्रकाशन की अन्य प्रमुख पुस्तकें



उत्कर्ष प्रकाशन की अन्य
परीक्षापयोगी पुस्तकों के लिए
Utkarsh Bookshala App
पर Visit करें।



उत्कर्ष प्रकाशन

Helpline : 977 336 0933
Mail : publication@utkarsh.com